E-Content--10

Hema Agarwal
(Assistant Professor
D.N. College, Meerut)

B.Ed - IIyear
Unit - I
Course Code- E-401
Course Title - Assessment for Learning.
Topic - Choice Based Credit System
(विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली)

विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली
(Choice Based Credit System)

Choice based credit system (CBCS) के तहत अब कोई भी छात्र अपने कोर्स में से कुछ विषय हटाकर, अन्य स्ट्रीम का एक या दो विषय चुन सकेंगे।

सी बी सी एस सिस्टम अपने कोर्स से उस विषय को हटाने का विकल्प देती है जिसकी पढ़ाई आप नही करना चाहते या आपको लगता है कि उस विषय को पढ़ना आपके लिए ~~xxxx~~ फायदेमंद नहीं होगा। इसके माध्यम से आप दूसरे स्ट्रीम के अपने पसंदीदा विषय की पढ़ाई कर सकते हैं। इस सिस्टम के तहत देश - विदेश के किसी भी विश्वविद्यालय में पढ़ाया जाने वाला कोई भी विषय चुन सकते हैं। इस व्यवस्था के तहत विद्यार्थियों की ओवरऑल रैंकिंग की जाएगी। विश्वविद्यालयों में इस व्यवस्था के लागू होने से पाठ्यक्रम व शिक्षा के स्तर में सुधार की उम्मीद है। देशभर के विश्वविद्यालयों में सी बी सी एस लागू करने की गाइडलाइन पहले ही यूजीसी जारी कर चुका है। इसे ग्लोबल एजुकेशन रिवॉल्यूशन (Global education Revolution) माना जाता है।

सी बी सी एस सिस्टम का उद्देश्य शिक्षा में उदारीकरण एवं वैश्वीकरण को एक साथ बनाए रखने हेतु, पाठ्यक्रम को भी पुनः परिभाषित ~~किया गया है~~ करना है। सी बी सी एस सिस्टम के तहत मूल्यांकन सेमेस्टर के मुताबिक किया जाता है। इसके अन्तर्गत

Scanned by TapScanner

विधार्थी विज्ञान, कला, वाणिज्य के लिए तीन साल तथा इंजीनियरिंग के लिए चार साल के Syllabus से बजाय सीबीसीएस सिलेबस के आधार पर प्रगति करता है। सभी सेमेस्टर में 15-18 सप्ताह शैक्षणिक कार्य होता है, + जो लगभग 90 शिक्षण दिवस का होता है।

क्रेडिट हस्तांतरण के अर्न्तगत यदि किसी कारणवश कोई छात्र अध्ययन का भार न सहन कर पाये या फिर व बीमार हो जाए तो ऐसी स्थिति में पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने और कम क्रेडिट आर्जित करने का भी नियम बनाया गया है, इस नियम के तहत अगले सेमेस्टर में वह अपने क्रेडिट पूरे कर सकता है।

सीबीसीएस सिस्टम में सभी परास्नातक पाठ्यक्रम कुल 100 क्रेडिट का ~~करवा जाये~~ होगा, जो चार सेमेस्टरों में सामान्य रूप से विभाजित करके प्रति ~~सेमे~~ Semester 25 credit का होगा।

सी० बी सी० एस सिस्टम में ग्रेडिंग -
(Grading in CBCS system)

यूजीसी द्वारा सी बी सीएस सिस्टम के लिए 10 अंको की ग्रेडिंग प्रणाली की शुरुआत की गई है।

10 - सर्वोत्तम, 9 - अति उत्कृष्ट, 8 - बहुत अच्छा
7 - अच्छा, 6 - औसत से ऊपर, 5 - औसतम, 4 - पास
3 - असफल, 0 - अनुपस्थित

क्रेडिट दो प्रकार से दिये जाते है - पहला परीक्षा द्वारा तथा दूसरा गैर परीक्षा द्वारा। परीक्षा द्वारा क्रेडिट प्राप्त करने हेतु छात्र को क्रेडिट के लिए निर्धारित परीक्षणों को पूरा करना होता है तथा गैर परीक्षा द्वारा क्रेडिट प्राप्त करने हेतु छात्र को राज्य स्तर, राष्ट्रीय स्तर या विश्वस्तर पर खेल-कूद से सम्बन्धित उपलब्धियों. NSS, NCC, वाद विवाद प्रतियोगिता आदि में आपनी दक्षता को प्रदर्शित करना होता है.

Scanned by TapScanner

UGC द्वारा निर्धारित कुल कार्य दिवस 180 दिन या 30 सप्ताह है। प्रति सेमेस्टर 90 दिन या 15 सप्ताह है। और प्रति विषय प्रति सप्ताह 4 घण्टें का समय निर्धारित ~~काम~~ है।

अत: 1 विषय के लिए एक वर्ष में कुल निर्धारित घण्टे = ~~[illegible]~~ 120 घण्टे

1 क्रेडिट = 15 सम्पर्क घण्टे

तब 120 घंटे = $120/15$ = 08 क्रेडिट होगा

अत: एक विषय के लिए 8 क्रेडिट होगी।

यदि छात्र पूरे साल 6 प्रश्न-पत्र पढ़ता है तो

कुल क्रेडिट = 6 × 8 = 48 क्रेडिट

अत: total curriculum 48 credit का होगा।

* विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली के लाभ (Merit of Choice Based credit system)

1.) CBCS छात्रों को अपनी पसन्द का पाठ्यक्रम चयन करने की स्वतन्त्रता देती है।

2) CBCS प्रणाली मे छात्र अतिरिक्त पाठ्यक्रम का चयन करके आवश्यक क्रेडिट की तुलना मे अधिक क्रेडिट भी प्राप्त कर सकते हैं।

3.) इस प्रणाली से कमजोर व प्रतिभाशाली सभी छात्रों को अपनी प्रतिभा के अनुसार विषयों को पढ़ने की आजादी होती है।

4.) राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय विश्वविधालयो मे क्रेडिट के हस्तांतरण के आधार पर स्थानीत होना आसान हो जाता है।

5.) यह प्रणाली छात्रों के लिए रोजगार के अवसरों मे सुधार करती है।

6.) यह प्रणाली संभावित नियोक्ताओं को और वैज्ञानिक स्तर पर छात्रों की प्रदर्शन का समर्थन करने में मदद करेगी।

7.) CBCS मे छात्र एक संस्थान से पाठ्यक्रम पूरा न कर सकने पर वहाँ से अर्जित क्रेडिट का लाभ दूसरे संस्थान से प्राप्त कर सकेंगे।

8.) CBCS मे छात्र किसी पाठ्यक्रम को पूर्ण न कर पाने की स्थिति मे निर्धारित न्यूनतम क्रेडिट अर्जित करने के पश्चात सम्बन्धित प्रमाण पत्र अथवा डिप्लोमा प्राप्त कर सकेंगे।

Scanned by TapScanner

1.) न्यूनतम निर्धारित समय में पाठ्यक्रम पूरा न कर पाने पर भी न्यूनतम निर्धारित क्रेडिट प्राप्त होने पर छात्र अगली कक्षा में प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे और अधिक मेहनत कर एक साथ पिछले व वर्तमान क्रेडिट वाले अंशों को पूरा कर सकेंगे।

विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली के दोष
Demerits of choice based credit system.

1. शिक्षकों पर काम का बोझ बढ़ सकता है।
2. स्टीक अंको (accurate Marks) का अनुमान लगाना आसान नहीं है।
3. इस प्रणाली मे अधिकांश समय परीक्षा में ही निकल जाता है, क्योंकि छात्र किसी कक्षा की पढ़ाई को पूरा किये बगैर ही निर्धारित न्यूनतम क्रेडिट प्राप्त कर अगली कक्षा में पहुँच जाते है और उन्हें एक साथ दोनों कक्षाओं की परीक्षा देनी होती है।
4. कभी-कभी छात्र कार्यभार (Workload) अधिक होने की स्थिति में पढ़ाई छोड़ देते है।

निष्कर्ष (Conclusions) -

देश भर मे विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा परीक्षा, मूल्यांकन और ग्रेडिंग प्रणाली के लिए कई तरीकों का पालन किया गया है। उस विविधता को ध्यान में रखते हुए, विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली का क्रियान्वयन एक छात्र के समग्र प्रदर्शन को एक सिंगल ग्रेडिंग सिस्टम के सार्वभौमिक तरीके से मूल्यांकन करने मे एक अच्छी प्रणाली सिद्ध होगा।

Scanned by TapScanner